ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(11): 267-270
www.allresearchjournal.com
Received: 19-08-2018
Accepted: 30-09-2018

डॉ. सविता उपाध्याय
एसो. प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
कन्या महाविद्यालय, भूड,
बरेली, एम.जे.पी. रूहेलखंड
विश्वविद्यालय, बरेली,
उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सविता उपाध्याय
एसो. प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
कन्या महाविद्यालय, भूड,
बरेली, एम.जे.पी. रूहेलखंड
विश्वविद्यालय, बरेली,
उत्तर प्रदेश, भारत

डा. महाश्वेता चतुर्वेदी के गीतों में लोकमंगल का स्वर

डॉ. सविता उपाध्याय

सारांश
कवि और लेखक अपने समय का प्रतिनिधि होता है। वह समाज का उन्नायक और विधायक भी होता है। डा. महाश्वेता चतुर्वेदी समकालीन काव्य के क्षेत्र में एक सुपरिचित हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने अपने काव्य का प्रणयन सामाजिक चेतना जाग्रत करने हेतु किया है। उन्होंने अनेक कृतियों का प्रणयन किया है, जिनमें उनके प्रमुख गीत संग्रह-मेरे गीत तुम्हारे मीत, ज्योति-कलश, रत्नांबरा, स्वर्णांबरा, पहिले घर में दीप जले तथा वंदे मातरम् सुप्रसिद्ध हैं।

कूट शब्दः कवि, गीतों, स्वर, संग्रह, मानव, कवयित्री, देश, जीवन, उद्बोधन

प्रस्तावना
डा. महाश्वेता चतुर्वेदी के गीतों में सर्वत्र लोकमंगल का स्वर समाहित है। कवयित्री गीतों के माध्यम से हृदय को विकसित करने की कामना करती है –

उर-अंबर विकसित हो जाए, अंध कालुष्य सभी धो जाए।
धुंध-कुहासा दूर भगाकर, ज्योतिर्मय जीवन कर जाओ।[1]

'स्वर्णांबरा' में डा. महाश्वेता चतुर्वेदी के पाँच गीत-संग्रह हैं – तुम मधुरता के जलद हो, अमृत-घट पाथेय तुम्हारा, बीन होकर रह गई मैं, प्रश्न का उत्तर न कोई, भिक्षुक अब भी देश हमारा। संग्रह के प्रथम गीत-संग्रह का गीत है स्वर्णिम प्रभात 'स्वर्णिम प्रभात को पाकर क्यों करता है अंधियारा।'[2]
मानवीय उद्बोधन यहाँ श्लाघ्य है। आस्तिकता और मानवतावाद के स्वर उनके गीतों में सर्वत्र हैं –

मेरे मन मंदिर में आओ।
कोई बाँट रहा शूलों को, पर चाहा करता फूलों को।
यह जो कुछ अनबूझ पहेली, तुम ही बस आओ सुलझाओ।[3]

मानव का मानव के प्रति क्या कर्त्तव्य हो, इसे कवयित्री ने गीतों के माध्यम से समझाया है –

वासंती उपवन को पाकर, नफ़रत की मत आग लगाओ,
यदि गुलाब को विकसाना है, मरुथल वाला भाग मिटाओ।[4]

देश के क़र्ज़दार होने पर कवयित्री को क्षोभ है। यथा- भिक्षुक अब भी देश
हमारा, जिस पर कोई सोच नहीं, पूँजी बाहर ले जाने में होता क्यों संकोच नहीं।[5]

कवयित्री के अनुसार देश का मंगल देशप्रेम से संभव है, अंधी सत्ता से नहीं –

नहीं देश से प्रेम किसी को बस अंधी सत्ता प्यारी,
समय-समय पर देशभक्ति की चर्चा ही लगती न्यारी।[6]

डा. महाश्वेता चतुर्वेदी का अन्य गीत-संग्रह है 'रत्नांबरा' जो पाँच खंडों में विभाजित है। याचना, वेदना के दीप, आँसू के चित्र, स्वप्नों के पंख एवं सुपर्णा। 'याचना' में कवयित्री का मानव से ईश्वर को न भूलने का आग्रह है। यथा –

तुम्हें नहीं विसराऊँ।
पत्तों-सा चंचल है जीवन, दृग का हुआ नहीं उन्मीलन,
इच्छाओं की लहरों से आसक्त न बन पाऊँ।
'मृत जीवन में प्राण जगाएँ, चट्टानों को धार बनाएँ
लाएँ रवि निचोड़कर भू पर, स्वर्णिम सस्य उगाएँ।
दुर्ग अभेद्य रहा नफ़रत का, बनें सुव्रती ध्वस्त करें हम।[8]

'वेदना के दीप' नामक गीत-संग्रह में वेदना को जीवन का आलोक स्वीकारते हुए कवयित्री का उद्बोधन है कि वेदना को अखंडित ज्योति-दीपक समझना चाहिए, क्योंकि ये जीवन का पथ प्रशस्त बनाते हैं। यथा –

इस अनोखी चाँदनी में, प्राण पिक है गीत गाती।
मंजरी ऐश्वर्य द्वारा मरु-हृदय को है सजाती।
आ गई बेला प्रतीक्षित, भर नयन जिसमें छलकते,
वेदना के दीप जलते।[9]

अंध भौतिकवादी सभ्यता ने गाँवों का रूप भी बदल दिया, कृत्रिम तरक्की पर
दृष्टिपात करते हुए कवयित्री का आवाहन सरल सहज जीवन की ओर है। यथा –

कजरी, ठुमरी, फाग नहीं अब सूनी है पीपल की छाँव।
चौपालों से रौनक खोई, खोई हैं सब गाथाएँ।
दूर मिठास हुई है जबसे, नकली लगती भाषाएँ।
हुई तरक्की है अब इतनी
बदल गए हैं सारे गाँव।[10]

जिनका धन मानवता के हित में नहीं आता, ऐसे संपन्न व्यक्तियों को घटाओं के माध्यम से प्रतीकात्मक शैली में उद्बोधित करते हुए डा. महाश्वेता चतुर्वेदी कहती हैं—

जल रही वसुधा निरंतर, चीख़ते हर ओत प्रांतर।
पर तुम्हारे वज्र उर में, आ रहा कोई न अंतर।
अर्थ-वंचित ए घटाओं क्या तुम्हारा है उमड़ना?[11]

'स्वप्नों के पंख' नामक गीत-संग्रह में कवयित्री जीवन को भार समझकर जीने
वालों को कर्मशील बनने की प्रेरणा देती हैं, यथा –

मिल न सका है यदि इच्छित, क्यों बैठा है निरुपाय?
हारे-हारे मन द्वारा हो पाया क्या कुछ साध्य।
संकल्पों के जादू से हँसने लगता संसार।[12]

'प्रिय बेटी स्मृति के लिए' नामक गीत में 'तीजों' पर जन्मी बेटी के दांपत्य जीवन के प्रति शुभकामना प्रत्येक माँ की बेटी के प्रति शुभाशंसा है –

गूँजे बस दांपत्य प्रेम की मधुर-मधुर शहनाई
किलकारी की गूँजों में हो राधा और कन्हाई।[13]

'रत्नांबरा' का पाँचवाँ खंड है 'सुपर्णा', जो सुंदर पंखों वाले पक्षी का प्रतीक मनुष्य है। वैदिक साहित्य में संसार रूपी वृक्ष पर ईश्वर और जीवन के रूप में दो पक्षी बैठे हैं। मानव रूपी पक्षी से कवयित्री का आवाहन है। सुंदर पंखों को अर्थवान बनाना, जिससे वह लक्ष्य को प्राप्त कर सके। यथा –

वृक्ष पर तेरा बसेरा।
नीड़ यह तेरा चपल है, मोहता फिर भी सकल है।
इस निशा के बाद में तेरा कहीं होगा सवेरा।[14]

वस्तुतः काव्य की पुकार है समाज और देश की पुकार। वह हृदय के भावों को अभिव्यक्त कर सजीव और शक्तिशाली बना देता है। सामाजिक शक्ति या सजीवता, सामाजिक अशांति या निर्जीवता, सामाजिक सभ्यता अथवा दुरावस्था का निर्णायक एकमात्र साहित्य है। कवयित्री महाश्वेता इसी भावना को लेकर चली हैं। उनके काव्य में सत्य, शिव और सुंदर की प्रतिष्ठा हुई है। उनके गीतों को पढ़ने से आध्यात्मिक अनुभूति होती है।
स्वांत:सुखाय होते हुए भी उनके गीत लोककल्याण के लिए हैं। महाकाव्य 'विवेक-विजय' मानव को आस्तिक और मननशील बनने की प्रेरणा देता है।[15] यथा–

सदा विवेक रहा है विजयी जिसका वैभवमय संसार
इंगित पथ रित भद्र समन्वित आती कभी न जिस तक हार।[16]

डा. महाश्वेता चतुर्वेदी ने अनेक खंडकाव्य लिखे हैं, जिनमें उपमन्यु - परीक्षा, अग्नि-सिंधु-विदुला, गुरु-दक्षिणा एक और कांचना, सूर्य पुत्री तपती तथा निर्वासिनी सुप्रसिद्ध हैं। कल्पना चावला पर भी आपने 'अंतरिक्ष बाला' नाम से लंबी रचना लिखी है, जिसमें उसके समर्पित जीवन का मूल्यांकन तथा मानवीय गुणों के विकास पर बल दिया गया है। 'सुपर्णा' नामक गीत-संग्रह में कवयित्री महाश्वेता मानवता की बात करते हुए मानव के अंदर उसे सुविकसित करने की बात करती है। 'वंदे मातरम्' नामक गीत-संग्रह में देशभक्ति से आपूरित गीत हैं। 'वेदायन' में चुनी गई ऋचाओं का आवाहन, संसार के कल्याण के लिए है। मानव मात्र के लिए मंगलमय वैदिक ऋचाएँ शांति-प्रेम-मानवता आनंद एवं करुणा का सुमार्ग इंगित करती हैं, जो अनुकरणीय है।[17]
यह शोध-पत्र तो उदाहरण-मात्र है। उनके काव्य की गहराई में जाकर सांस्कृतिक चेतना के स्वरूप को समझा जा सकता है। सांस्कृतिक चेतना ही काव्य की ऊर्जा है, जो हृदय का परिष्कार कर, मन को ऊर्ध्वमुखी बनाती है।[18] वंदे मातरम् के अंतर्गत

भारत वंदना में कवयित्री की देशभक्ति उल्लेखनीय है। यथा–

दुनिया में सबसे बढ़कर भारत रहा हमारा
इससे ही प्राण पाएँ इसको ही प्राण देंगे
गद्दारियों को करके अपयश कभी न लेंगे
यह वंदना हमारी वरदान है हमारा
जिसको लहू भी देकर उपवन बने खिलेंगे
जितना तपेंगे ज्वालाओं ने हमें निखारा।[19]
इसी संग्रह की अन्य ओजस्विनी रचना है–
'काँपता जाता लहू से देश का वातावरण
फाग का मौसम नहीं है आग को बरसाइए।[20]

हिंदी -काव्य में राष्ट्रीयता की परंपरा आरंभिक काल से ही विद्यमान रही है।

वैदिक साहित्य से प्रभावित डा. महाश्वेता चतुर्वेदी के गीतों की अनेक विशेषताएँ हैं, जिनमें लोकमंगल, मानवता, संवेदना, ज्ञान-भक्ति, आस्तिकता, रहस्य, जागृति, सांस्कृतिक अनुराग आदि प्रमुख हैं।

संदर्भ

1. ज्योतिकलश, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
2. तुम मधुरता के जलद हो, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
3. अमृत घट पाथेय तुम्हारा, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
4. प्रश्न का उत्तर न कोई, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
5. भिक्षुक अब भी देश हमारा, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
6. याचना, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
7. वेदना के दीप, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
8. आँसू के चित्र, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
9. याचना, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
10. आँसू के चित्र, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
11. स्वप्नों के चित्र, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
12. स्वप्नों के पंख, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
13. सुपर्णा, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
14. मंदाकिनी, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
15. विवेक-विजय, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
16. वंदे मातरम्, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी
17. संवाद केसरी, डा. महाश्वेता चतुर्वेदी